गमक

→ गमक प्रयोग अधिकतर ध्रुपद गायन में होता है। विशेष प्रकार के कंपन को गमक कहते हैं।

→ कभी-कभी ख्याल गायक भी गमक की तानें

→ गमक के प्रकार

संगीत रत्नाकर – 15
" पारिजात – 20
" पंचरत्न – 7

→ संगीत रत्नाकर में मुख्य 15 गमक है

(1) कंपित गमक – मूल स्वर के आगे या पूर्व के स्वर से मूल स्वर को बार-बार अतिशीघ्रता से स्पर्श करते हुए मूल स्वर का उच्चारण होता है तो कंपित गमक का बोध होता है,

(2) स्फुरित गमक – कंपित स्वर को बार-बार शीघ्रता से उच्चारण करते समय जब मूल-स्वर स्पष्ट रूप से उच्चारित होता है,

→ स्फुरित गमक के तीन भेद

(क) जमजमा – मिजराब के एक प्रहार से शीघ्रता से दो स्वर बजाना

(ख) मुर्की – एक मिजराब से तीन स्वर बजाना

(ग) किटकिरी – एक मिजराब में चार स्वर शीघ्रता से बजाना